International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 06-12-2024, Accepted: 05-01-2025, Published: 20-01-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 26-28

16वीं–17वीं शताब्दी में नारी शिक्षाः एक विश्लेशणात्मक अध्ययन

राकेश कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश
किसी भी सभ्यता या संस्कृति की आत्मा को समझने तथा उसकी उपलब्धियों एवं श्रेष्ठता का मूल्यांकन करने का सर्वोपरी आधार उस काल की स्त्रियों के दशा का अध्ययन करना हैं। स्त्रियों की दशा किसी भी सभ्यता या संस्कृति का मापदंड माना जा सकता है। हाँलाकि भारत में स्त्रियों का इतिहास अत्यन्त गतिशील रहा है। इस लेख के माध्यम से 16वीं–17वीं शताब्दी मेंस्त्रियों की सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र में निभाई गई भूमिका को परखने की चेष्टा की गई है। मुगल बादशाहों द्वारा महिलाओं के प्रति उनका आचरण, व्यवहार, आदर, सम्मान एवं सहानुभूति की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है। वस्त्र, उद्योग, कृषि, व्यापार एवं वाणिज्य, वित्तीय प्रबंधन एवं संचालन में महिलाओं की भूमिका के योगदान का तथ्यों के आधार पर आँका गया है। इस लेख द्वारा पर्दे के पीछे ही सही मायने पर महिलाओं द्वारा नारीवाद की 'लौ' को जलाने की प्रयास की निर्णायक रखा गया है।

मूलशब्दः शिक्षा, स्त्री, तुर्की, फारसी, मदरसा, 'मखफी'

भारत में मुगलों के आगमन के उपरान्त शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन होता है लेकिन यह शिक्षा व्यवस्था सल्तनतकालीन शिक्षा के निरंतरता के रूप में रही। इसके पूर्व जो शिक्षा हिन्दू धर्म पर आधारित थी, उसे परिवर्तित करके इसमें पूर्णतया मुस्लिम धर्म पर आधारित शिक्षा के परिवेश को समाहित किया गया। जिसके फलस्वरुप मुगल काल में शिक्षण पद्धति, शिक्षालय एवं शिक्षा के उद्देश्य में व्यापक परिवर्तन हुआ। पहला मुगल शासक बाबर (1526–1530) साहित्यिक अभिरूचि वाला व्यक्ति था और उसके पास तुर्की, अरबी और फारसी भाषा का भी ज्ञान था। उनकी आत्मकथा 'तुजुक–ए–बाबरी', उसके संस्मरण एवं साहित्यिक स्रोतों से इस बात की जानकारी प्राप्त होती है। उन्हें शिक्षा से विशेष प्रेम था और उसने कई शिक्षण संस्थाओं की मरम्मत करायी और उसमें अध्यापन कार्य प्रारम्भ कराया। बाबर ने अपने चार वर्ष के शासन काल में भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु प्रयास किया। बाबर ने अपने पुत्रों एवं अमीरो को भी शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया। बाबर ने 'शुहरत–ए–आम' विभाग की स्थापना की जो शिक्षण संस्थाओं का वित्तपोषण करता था। बाबर द्वारा दिल्ली में स्थापित मदरसे में उच्चस्तरीय एवं आधुनिक शिक्षा का प्रमाण मिलता है जिसमें गणित, ज्योतिष, भूगोल जैसे विषयों की पढाई होती थी।

मुगलकालीन शिक्षित एवं विदुषी महिलाओं में कुछ प्रसिद्ध महिलाओं काविवरण अधोलिखित हैः–

इसान–ए–दौलत

यह बाबर की दादी थी तथा बाबर के मानसिक विकास में उन्होंने बहुत प्रभावशाली रूप से भाग लिया था। उसी से प्रेरणा प्राप्त कर बाबर ने भारत के इतिहास के सन्दर्भ में जाना और भारत पर आक्रमण करने का परामर्श प्राप्त किया। उसके शासनकाल में उसकी सलाहकार भी थी।

कुतलुक निगार खानम

बाबर की माँ कुतलुक निगार खानम थी, जो एक सुप्रसिद्ध विद्वान की पुत्री थी एवं स्वयं भी फारसी एवं तुर्की भाषा में दक्ष थी। बाबर की दादी भी सुसंस्कृत महिला थी तथा माँ की अपेक्षा दादी ने उसे अधिक प्रभावित किया था।

खानजादा बेगम

खानजादा बेगम (1478–1545) एक तैमूर राजकुमारी और फरगना के अमीर उमर शेख मिर्जा द्वितीय की सबसे बड़ी बेटी थी। वह मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर की बड़ी बहन भी थीं। वह और उसका भाई जीवन भर एक–दूसरे से गहराई से जुड़े रहे, एक ऐसी अवधि जिसके दौरान परिवार मध्य एशिया में एक छोटी और अस्पष्ट रियासत पर शासन करने से भारतीय उपमहाद्वीप के एक बड़े हिस्से पर शासन करने के लिए आगे बढ़ा। बाबर ने अपनी बहन को बादशाह बेगम की मानद उपाधि से सम्मानित किया और वह वास्तव में उसकी मृत्यु के बाद अपने साम्राज्य की पहली महिला थी।खानजादा बेगम का उल्लेख बाबरनामा, उनके भाई के संस्मरणों में हमेशा स्नेह और सम्मान के साथ किया गया है। हुमायूँनामा में उनकी भतीजी गुलबदन बेगम द्वारा भी उनका अक्सर उल्लेख किया जाता है, जो उनकी चाची को 'सबसे प्यारी महिला' (उर्फ जनम) कहती हैं।

गुलबदन बेगम

योग्य पिता बाबर की योग्य पुत्री गुलबदन बेगम थी यद्यपि दरबारी इतिहासकारों के विवरण में प्रारम्भिक जीवन और अध्ययन के विषय में कोई विस्तृत और क्रमबद्ध ढ़ंग से सूचना हमें प्राप्त नहीं हैं परन्तु इसमें संदेह नहीं है कि वह अपने समय की उच्चशिक्षित प्रतिभाशाली महिला थी। मुगलकाल की वह प्रथम साहित्यिक रत्न थी। अकबर के समय में रचित अकबरनामा की सहायता के लिए उसने 'हुमायूँनामा' के नाम से एक अत्यन्त मूल्यवान तथा सूचना प्रदायी रचना को लिखा। अभी भी हुमायूँ के राज्यकाल से सम्बन्धित मूल्यवान सूचनाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध कृति है क्योंकि समकालीन सामाजिक और राजनीतिक इतिहास के विभिन्न पहलुओं के लिए हुमायूँनामा ग्रंथ हमारी सहायता करता है।

उसके पास काव्य प्रतिभा भी थी तथा कई अत्यन्त सुन्दर कविताओं की रचना भी की थी। गुलबदन बेगम फारसी एवं तुर्की भाषा में पूर्ण रूप से विदुषी थी। उसकेकाव्य के अतिरिक्त अधिकतर पद्यों की भी रचना की। संगीत, नृत्य एवं कला जैसी कलाओं के अलावा चिकित्सा शास्त्र में भी दक्ष थी।गुलरूख बेगम बाबर की पुत्रियों में जो द्वितीय स्थान पर थी, इसने भी शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की थी। गुलरूख बेगम काव्य प्रेमी थी एवं बहुसंख्यक पद्यों की रचना भी किया। उसकी कवितायें उच्च स्तर की थी। 'मआसिर–उल–उमरा' में उसकी कविताओं के उदाहरण दिये गये है। इसके पास व्यक्तिगत पुस्तकालय की भी जानकारी मिलती है। उसको पुस्तकें पढ़ने का बहुत बड़ा शौक था।

हमीदा बानों बेगम

अकबर की माँ हमीदा बानों बेगम थी वह अपनी तरूण अवस्था में ही सुशिक्षित और दृढ़चरित्र की महिला थी। जब उसने हुमायूँ के साथ विवाह के लिए प्रस्ताव भेजा परन्तु दोनों की पृष्ठभूमि में अत्यन्त असमानता थी। वह उच्च शिक्षित, धार्मिक प्रवृत्ति एवं मजबूत चरित्र वाली महिला थी।

सलीमा सुल्ताना बेगम

हुमायूँ की भतीजी सलीमा सुल्ताना बेगम एक सुपठित ओर पूर्णतः प्रवीण शाहजादी थी जो फारसी साहित्य में पण्डित होने के साथ–साथ एक अच्छी कवयित्री भी थी। जहाँगीर अपनी आत्मकथा में इस महिला को इस प्रकार सम्मानित श्रद्धाजंलि अर्पित करता है कि 'वह सभी गुणों से विभूषित थी, महिलाओं में क्षमता एवं बुद्धि (कौशल) का यह स्तर बहुत ही कम पाया जाता है। वास्तव में अकबर के हरम की वह एक बहुशिक्षित और अत्यन्त योग्य महिला थी। फारसी भाषा एवं साहित्य पर उसका पूर्णाधिकार था। बदायूँनी अपने विवरण में सलीमा बेगम को एक जिज्ञासु पाठक के रूप में वर्णित करता है।वह 'मखफी' उपनाम से कविताएँ भी लिखती थी। उसकी कविताएँ ऊँचे स्तर की थी। 'मआसिर–उल–उमरा' में उसकी कविताओं के उदाहरण दिये गये है। इसके पास व्यक्तिगत पुस्तकालय के संदर्भ जानकारी मिलती है उसको पुस्तकों को पढ़ने का बड़ा शौक था।

धाय माँ माहम अनगा

सम्राट अकबर की धाय माता माहम अनगा अत्यन्त पढ़ी–लिखी महिला थी। उसे न मात्र अध्ययन वरन् शिक्षा के प्रसार में रूचि दिखलाई। उसका यह विश्वास था कि लोगों को शिक्षित करना एक बहुत बड़ी सेवा है। उसकी मकतब एवं मदरसों के निर्माण में विशेष रूचि थी। दिल्ली में एक मस्जिद से सटे हुये एक मदरसा की स्थापना की थी जिसे 'खैर–उल–मंजिल' के नाम से जाना जाता था।

जाना बेगम

जाना बेगम मुगलकाल में शिक्षित महिलाओं में जाना बेगम का नाम प्रसिद्ध हैं। वह अर्ब्दुरहीम खानखाना की पुत्री थी। वह सुशिक्षित होने के साथ ही कुरान पर एक टीका की रचयिता भी थी। इसकी रचना के लिए सम्राट अकबर ने उसको 50,000 दीनार पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया था। वह उदारता एवं विद्वानां को संरक्षण देने के लिए प्रसिद्ध थी।

नूरजहाँ

नूरजहाँ एक अद्वितीय, अप्रतिम तथा योग्यतम् महिला थी। सम्भवतः सम्पूर्ण मुगलकाल के इतिहास में वह सर्वाधिक सुसंस्कृत महिला तथा ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में निपुण थी। उसके गहन ज्ञान तथा व्यवहारिक अनुभवों ने अपने पति से साम्राज्य के प्रशासन को चलाने के लिए उसे पर्याप्त बुद्विमान तथा चालाक बना दिया। राजनीतिक चातुर्य एवं प्रशासनिक क्षेत्र में कुशलता के अतिरिक्त उसने साहित्यिक क्रिया–कलापों के क्षेत्र में अपना नाम प्रसिद्ध बना दिया। शाही परिवार की अनेक अन्य महिलाओं के समान उसे भी काव्यात्मक ज्ञान था किन्तु वह किसी भी समय धारा प्रवाह कविता की रचना में योग्य थी।उसके इसी गुण ने उसे शाही संरक्षक का हृदय जीतने योग्य बनाया। नूरजहाँ की बुद्विमता एवं प्रतिभा के विषय में लिखते हुए बेनी प्रसाद ने लिखा है कि 'प्रकृति ने उसे शीघ्र समझ, तीक्ष्ण मेधा शक्ति, संतुलित व्यवहार तथा स्वास्थ्य सामान्य भावना प्रदान किया था। शिक्षा ने प्रकृति के इस उपहार का अधिक मात्रा में विकास किया। वह फारसी साहित्य की अच्छी जानकार थी। त्रुटिरहित (शुद्ध) तथा धारा प्रवाह करती थी जिस अपने पति के हृदय पर अधिकार करने में सफल हरी।सलीमा बेगम के समान वह भी 'मखफी' उपनाम से कविता करती थी। उसके द्वारा रची गई अनेक सुन्दर कविताओं के उदाहरण 'मुन्तखब–उल–लुबाब' एवं 'खुलासात–उत–तवारीख' मेंउपलब्ध है। नूरजहाँ ने अपने काल की शिक्षा के विकास में पर्याप्त योगदान दिया। नूरजहाँ की रूचि चित्रकला में भी थी। वह सजावट, कला तथा नये–नये कढ़ाईदार वस्त्रों के बनावट में निपुण थी।

मुमताज महल

अजुर्मंद बानों (मुमताज महल) आसफॅ खाँ की पुत्री तथा शाहजहाँ की प्रेयसी और ताज महिला के रूप में विख्यात मुमताज महल भी शिक्षा एवं सस्कृति के अपने गुणों के लिए किसी से भी कम प्रसिद्ध नहीं थी। शाही परिवार की अनेक महिलाओ के समान वह भी योग्य, शिक्षा और कला कौशल से पूर्ण थी तथा अपनी साहित्यिक रूचियों एवं अत्यन्त विकसित काव्यात्मक गुणों के लिए विख्यात थी। घर के अंदर अपने सहयोगी अथवा मित्र के रूप में एक विशिष्ट महिला विद्वान 'सती–उल–निशा' थी जो सम्भवतः उसके अवकाश के साथ मुमताज महल के साहित्यक एवं संस्कृति कार्यों में सहायता करती थी।वह स्वयं प्रकृति प्रदत्त प्रतिभाशाली व्यक्तियों की संरक्षिका के रूप में भी थी। प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से उसने अपने समय को अनेक विद्वानों की सहायता भी की।

जहाँआरा

शाहजहाँ की श्रेष्ठ और सबसे प्रिय पुत्री जहाँआरा शाही दरबार तथा अपने पिता के घराने की अत्यन्त योग्य एवं उच्च कोटि सुशिक्षित रत्नों में एक थी। अपनी क्षमताओं तथा अनेक विषयों में अत्यन्त विदुषी थी। अनेक ठोस प्रमाणों में यह मान्यता है कि वह राज्य की प्रथम महिला के स्थान पर पहुँच गयी और उसे 'पादशाह बेगम' के नाम से जाना जाता था। नजीर, जो हकीम रूफनाकाशी का भाई था, उसने कुरान फारसी पढ़ाया। वह इतिहास, संगीत, दर्शन शास्त्र तथा साहित्य मे गहन रूचि लिखती थी। शाहजहाँ ने'सती–उल–निशा' को जहाँआरा की शिक्षिका नियुक्त किया था। साहित्य के क्षेत्र में वह एक दैदीप्यमान नक्षत्र के समान थी। दारा शिकोह को समान उसने भी पौराणिक अथवा आध्यात्मवाद पररिसाले लिखे। शैक्षणिक क्षेत्रों में उसने अपने पिता के दरबार की साहित्यिक प्रतिभाओं को संरक्षण प्रदान किया और उन्हें पुरस्कृत किया जो वास्तव में गद्य, पद्य अथवा ज्ञान के अन्य शाखाओं में महत्वपर्णू योगदान दिया। मीर मुहम्मद अली माहिर जिनकों मुराद खाँ की उपाधि प्राप्त थी। इन्होनें जहाँआरा की प्रंशसा में एक मसनबी लिखा। जिसमें उसके साहित्यिक संरक्षण की प्रंशसा तथा उसकी उदारताकी तुलना ईश्वर की दयालुता से की है। वह दो प्रसिद्ध कृतियों की रचयिताथी। एक रचना अजमेर के मुईनुद्दीन चिश्ती सूफी संतो एवं उसके उत्तराधिकारियों की आत्मकथा 'मुनीस–उल–अरवाह' की रचना की थी। दूसरी रचना अपने आध्यात्मिक गुरू पीर मुल्लाह शाह बदाख्शानी के जीवन पर आत्मकथा 'शहविया' के नाम से जाना जाता है। जहाँआरा पद्य के अतिरिक्त गद्य की रचना करने में भी प्रवीण थी। उसने अपने विषय में स्वयं लिखा कि मेरी कब्र को कोई भी मिट्टी और घास के अतिरिक्त किसी से भी नढ़के क्योंकि गरीबों की कब्रों के लिए सर्वाधिक अनकूल होता है। जहाँआरा बेगम ने आगरे की जामा मस्जिद से सटे एक मदरसें का निर्माण भी किया था। यह गरीब विद्वानों की स्त्रियों एवं पुत्रियों को दान दिया। राजधानी की महिला सस्था की अध्यक्षा भी थी।

जोबिन्दा बेगम

सम्राट शाहजहाँ की पुत्री जोबिन्दा बेगम जो एक सुशिक्षित महिला थी।वह एक प्रतिभाशाली कवयित्री थी और उसने रहस्यवादी कविताओं एक ग्रंथ लिखा था। यह ग्रंथ आज भी भारत और विशेषकर पंजाब के विद्वानों रूचि पूर्वक पढ़ा जाता है। उसकों

लाहौर में रावी नदी के तट पर रहने में अच्छा लगता था और वहीं पर आध्ययात्मिक कविताओं को लिखती थी।

सती–उल–निशा

सती–उल–निशा' हरम की एक अन्य विदुषी महिला थी जो अपनी उच्च शिक्षा और अतुल साहित्यिक प्रतिभा के कारण जहाँआरा बेगम की शिक्षिका नियुक्त की गयी थी। इस्लाम धर्म के धार्मिक ग्रंथों का उसने गहन अध्ययन और मनन किया था। वह फारसी सहित्य की ज्ञाता था और कविता करने में काई उसकी समानता करने वाली दूसरी महिला नहीं थी।

जेबुन्निसा

औरंगजेब की पुत्रियाँ सुशिक्षित थी और उन्हें सम्राट ने शिक्षा सिद्धान्तो के अनुसार पढ़ाया लिखाया था। उनमें सर्वाधिक प्रतिभाशली जेबुन्निसा थी। औरंगजेब ने अपनी पुत्री जेबुन्निसा को पढा़ने के लिए एक सुशिक्षित फारसी महिला हफीजा मरियम और मुल्ला सहद अशरफी मजद्रानी को नियुक्त किया था। कुरान के ज्ञान के अतिरिक्त वह अरबी और फारसी का अच्छा ज्ञान रखती थी। साहित्यिक ज्ञान में उसे विशेष रूचि थी। इसके अतिरिक्त गणित, ज्योतिष विद्या ओर अन्य विज्ञान जैसे विषायों भी उसे ज्ञान था। लेखन काल में भी प्रवण थी और शिकस्त नस्तलीक और नस्ख शैलियों मे वह लिखती थी।अनेक विद्वानउसका संरक्षण प्राप्त करने के लिए लालायित रहते थे। 'मआसिर–ए–आलमगीरी' से ज्ञात होता है उसे कुरान कंठस्थ था जिससें उसे सम्राट ने 30,000 सोने के सिक्के पुरस्कार में दिये थे। जेबुन्निसा ने 'दीवान–ए–मखफी' और अपने नाम पर एक पुस्तक 'जैबुल मुसहहात' लिखे थे। अपने जीवन के अंतिम समय में 'तजकिरात–उल–धरीब' नामक ग्रंथ की रचना किया था। दारा शिकोह उसने एक अनुवाद विभाग की स्थापना की थी, जहाँ भाषाविद् मूल्यवान ग्रंथों का अन्य भाषा में अनुवाद करते थे। अनुवाद उसके पुस्तकालय की शोभा बढ़ाते थे। 'मआसिर–ए–आलमगीरी' के अनुसार उसके पुस्तकालय में इतिहास, साहित्य, कानून और इस्लाम के धार्मिक ग्रंथ थे। वह प्रतिदिन नियमित रूप से कई घण्टे अध्ययन करती थी। उसने ग्रंथावलय की उत्तम व्यवस्था एवं ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ बनाने के लिए योग्य एवं अनुभवी व्यक्तियों को नियुक्त किया था। जेबुन्निसा को अध्ययन में गहन रूचि थी। वह लेखकों, कवियों, साहित्यकारों, कलाकारों तथा अन्य विद्वानों को अपने पिता के शाही दरबार में सरंक्षण देती थी। वह व्यक्तिगत लोगों को दिशा निर्देश प्रदान करती और विद्वानों को पुरस्कार देती थी।

जीनत–उल–नीसा

औरंगजेब की छोटी पुत्री जीनत–उल–नीसा थी। शैक्षिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त महिला थी। उसे बचपन से ही सुव्यवस्थित शिक्षा प्राप्त थी। अपने परिवार की परम्परानुसार उसने विद्वानों तथा गुणी व्यक्तियों को संरक्षण प्रदान किया था। इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों एवं नियामों का उसे अच्छा ज्ञान था।

उपरोक्त शाही महिलाओं के अतिरिक्त प्रान्तीय महिलाओं ने स्त्री शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया था जिनमे कुछ का विवरण निम्नलिखित हैः–

हब्बा खातून

कश्मीर शासक युसुफ शाह चाक (1578–1586) की पत्नी हब्बा खातून थी। वह कश्मीर साहित्य की एक सर्वाधिक रोमांटिक चरित्र है। वह स्वयं एक संगीतकार तो थी। उसके साथ ही उन्होनें संगीत के लिए एक विद्यालय की भी स्थापना करवायी थी। उनके गीत काश्मीर के स्त्रियों के प्रिय लोकगीत बन गये। उन्होंने देश के विभिन्न भागों से शाही संगीतकारों को निमंत्रित किया। वह ईरानी संगीत के विभिन्न कलाओं में भी निपुण थी। पिता अब्दुल रथीर ने उन्हेंमस्जिद से जुड़े एक विद्यालय (मकतब) में पढ़ाने के लिए भेजा था, जहाँ उन्होनें कुरान के पठन और गायन की शिक्षा प्राप्त की। उसने फारसी कवियों जैसे शेख सादी, करीमा, गुलिस्ता एवं बोस्ता आदि कवियों का अध्ययन किया। इसे अतिरिक्त कश्मीर कवियों का भी एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया था। हब्बा खातून के अतिरिक्त कश्मीर के अनेक उदाहरण प्राप्त होते है। जैसे कि सुरहयात खातून, गुल खातून आदि। इनके दृष्टान्तों से ज्ञात होता है कि इन स्त्रियों ने विद्यालयों की स्थापना करवायी। खानकाहों एवं मस्जिदों का निर्माण करवाया एवं सामाजिक क्षेत्र में जागरूकता से रूचि ली।

चाँद बीबी

बीजापुर के अली आदिलशाह की पत्नी चाँद बीबी थी। वह अत्यन्त दक्ष थी एवं उसके पति भी गम्भीर विषयों पर उनसे विचार–विर्मश किया करते थे। वह स्वयं घुड़सवारी एवं सैन्य प्रदर्शनों का निरीक्षण करती थी। उसने कई सेनिक अभियानों में भाग लिया। उस समय अत्यन्त योग्यतापूर्वक एवं सावधानी से राजुकमार तथा उनकी शिक्षा साथ ही राजकीय प्रशासन पर भी पूर्ण ध्यान दिया। चादँ बीबी ने इब्राहीम आदिल शाह के संरक्षक रूप में भी कार्य किया।

उपरोक्त अतिरिक्त उच्च वर्गीय अभिजात वर्ग एवं सरदारों की स्त्रियाँ भी पढ़ी लिखी थी। परन्तु मध्यम वर्ग एवं निम्नवर्ग की स्त्रियाँ घर के अन्दर रहकर शिक्षा ग्रहण करती थी। शाही परिवार की राजकुमारियो के लिए महलों में ही उच्च शिक्षा का प्रबन्ध किया जाता था। उन्हें धार्मिक ग्रन्थों के अतिरिक्त साहित्यिक, गृह विज्ञान एवं रूचि अनुसार सैन्य शिक्षा प्रदान की जाती थीं

संदर्भ सूची

1. पी0 एल0 रावत,हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजूकेशन, आगरा, 1956।
2. बेनी प्रसाद, हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर, इलाहाबाद, 1962।
3. एम0 एल0 भग्गी, मध्यकालीन भारत की संस्कृति और विचार, अम्बाला, 1965।
4. बी0 के0 सहाय, एजूकेशन एण्ड लर्निंग अण्डर द ग्रेट मुगल्स, बम्बई, 1968।
5. एस0 ए0रशीद, सोसाइटी एण्ड कल्चर इन मिडिक्लर इण्डिया, कलकत्ता, 1969।
6. एस0 एम0 जाफर,एजूकेशन इन मुस्लिम इण्डिया, दिल्ली, 1973।
7. एन0 एन0 ला, प्रमोशन ऑफ लर्निंग इन इण्डिया ड्यूरिंग मुहम्मडन रूल, दिल्ली, 1973।
8. बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, जयपुर, 1974।
9. आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, आगरा, 1982।
10. कृष्ण लाल रे, एजूकेशन इन मेडिवल इण्डिया, दिल्ली, 1984।
11. झारखण्डे चौबे और कन्हैया लाल श्रीवास्तव, मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं भारतीय संस्कृति, लखनऊ, 1990।